ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 203-206**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR-July-Sept. 2025

गुप्तकालीन आभूषण

प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी

सहायक आचार्य– प्राचीन इतिहास, श्री सुदृिष्ट बाबा पी0जी0 कॉलेज, सुदिष्टपुरी–रानीगंज, बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-30.08.2025, Revised-07.09.2025, Accepted-14.09.2025 **E-mail: prakashtripathi742@gmail.com**

सारांशः भारत में सुदूर प्राचीन काल से ही व्यक्ति सौन्दर्य–प्रेमी रहा है। स्त्री–पुरुष दोनों ही समानरूप से अपने शरीर को सुन्दर एवं आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के वस्त्रों के अतिरिक्त अनेक प्रकार के आभूषणों का प्रयोग भी करते रहे हैं। सिन्धु घाटी के स्त्री–पुरुषों को आभूषणों से विशेष प्रेम था। धनी एवं निर्धन समान रूप से इस ओर आकृष्ट थे। अपनी सामर्थ्य के अनुसार वे कम या अधिक कीमती आभूषण बनवाते तथा उन्हें धारण करते थे। कुछ आभूषण ऐसे थे जो स्त्री–पुरुष दोनों समान रूप से पहनते थे। ऋग्वेद से विदित होता है कि स्त्री और पुरुष दोनों अनेक प्रकार के आभूषण पहनने में समान रूचि रखते थे। गुप्तकाल तक आकर अलंकारों के विविध प्रकार और रूप विकसित हो गए थे। वस्तुतः भारतीय इतिहास में गुप्तयुग मंडन की शालीनता का युग भी था। शरीर की स्वच्छता और उसे दर्शनीय बनाने के लिए जितने उपक्रम इस काल में हुए उतने न पहले हुए थे, न पीछे हुए। तत्कालीन साहित्य में आभूषण (आभरण, भूषण, अलंकार, मंडन) उसी परिमाण में परिगणित हुए हैं जिस परिमाण में समकालीन मूर्तियों और चित्रों में प्रदर्शित हैं। उनसे ज्ञात होता है कि स्त्री–पुरुष दोनों ही समान रूप से आभूषणों का प्रयोग करते थे। आभूषण का विशेष प्रचार प्रधानतः स्त्री वर्ग में था। वस्तुतः स्त्री का सौन्दर्य अनेक प्रकार के आभूषणों से संवृद्ध होता था।

कुंजीभूत शब्द– आभूषणों, गुप्तयुग मंडन, आभरण, भूषण, अलंकार, सौन्दर्य–प्रेमी, धनी एवं निर्धन, गुप्तयुग मंडन, शालीनता युग।

पुराणों से विदित होता है कि सुदेष्णा ने अपने प्रेमी दीर्घतमा के पास जब अपनी धाय को भेजा तब उसे अलंकारों से भूषित किया था। गुप्तकाल में पुत्र, सुहृद, पशु के साथ आभूषण की भी गणना की जाती थी। आभूषणों को बिना धारण किये हुए स्त्रियों का पति के सामने जाना दोषपूर्ण माना जाता था। समकालीन साहित्य और कला में स्त्री–पुरुष दोनों के अनेक प्रकार के आभूषणों का चित्रण हुआ है। ये आभूषण रत्न–जटित , सुवर्ण और मोती के होते थे तथा सिर पर कानों, गले, बाजू, कलाई, उँगली, कटि और पैरों में पहने जाते थे।

शीर्षाभूषण– सिर पर धारण करने वाले आभूषण चूड़ामणि , शिखामणी , मुक्तगुण , किरीट , मुकुट , मौलि आदि थे। इनका प्रयोग प्रायः राजवर्ग के पुरुष किया करते थे। राजाओं के सिर पर उष्णीष (पगड़ी), उसके ऊपर किरीट तथा सबके ऊपर शेखर धारण करने की रीति थी। किरीट–मुकुट बोधिसत्व और विष्णु के मस्तकाभराग थी थे। साधारण लोग शीश पर चूड़ामणि, रत्नजाल या मुक्ताजाल धारण करते थे। स्त्रियाँ ललाट के ऊपर सीमन्त के आरम्भ स्थान पर एक मणि पहनती थीं। इसका नाम चूड़ामणि था और यह सीमान्त–चुम्बी होता था। सिर पर पहनने का शीशफूल नामक गहना भी होता था जो माथे के ऊपर ठीक बीच में मांग पर पहना जाता था। चन्द्रगुप्त द्वितीय के 'धनुर्धारी प्रकार' की स्वर्ण मुद्राओं के पृष्ठ भाग में लक्ष्मी तथा पर्यंकस्थित राजा रानी प्रकार के पृष्ठ भाग में रानी टीका (मांग) पहने है। रत्नजाल केशों को ढँकने वाला रत्नों या मोतियों का जाल होता था। स्त्रियाँ अपनी वेणियों में फूल की जगह अनेक प्रकार के रत्न–फूल गूँथती थीं या अन्य अलंकरण धारण करती थीं जैसे स्वर्ण–माला गूँथना आदि। अलकों में मुक्ताजाल गूँथने का प्रचलन भी था। पूर्वमेघ में मोती गूँथे जूड़े का उल्लेख किया गया है। स्त्रियाँ बालों को तितर–बितर होने से बचाने के लिए उनके ऊपर जाली (जालिका) लगाती थीं।

बालों का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए भिन्न–भिन्न पुष्पों का वेणी के रूप में अथवा स्वतन्त्र ढंग से उपयोग होता था। चित्र–विचित्र फूलों से अलंकृत केशपाश को कालिदास ने कुसुमोत्खचित कहा है। अलकापुरी की कुलवधुएँ अपनी चोटियों में नये खिले हुए कुन्द के फूल गूँथती थीं तथा अपने जूड़े में नये कुरबक के फूल खोंसती थीं। विभिन्न पुष्पराशि के बने माल्य से केशपाश सजाया जाता था। जूही के फूलों से अपने बालों को गूँथनेवाली नायिका को यूथिका शबलकेशी कहा गया है। रघुवंश में धूप से सुगन्धित करके मल्लिका गूँथने का उल्लेख है। स्त्रियाँ वर्षा ऋतु में नई केसर, केतकी और कदम्ब के नये फूलों की मालाएँ गूँथ कर अपने जूड़े में बाँधती थीं। दूब में पिरोई हुई पीले महुए के फूलों की माला जूड़े में लपेटी जाती थी। पुरुष भी अपनी प्रेयसियों के सिर की शोभा के लिए जूही की नई–नई कलियों तथा मालती और मौलसिरी के फूलों की माला बनाते थे। बसन्त में स्त्रियों का सिर चम्पक से सुवासित होता था। उनके अलकों में अशोक और नवमल्लिका के पुष्प सुशोभित होते थे। केश–पाश में नवकुरवक–पुष्प भरे होते थे। वर्षा ऋतु में पुष्पों से सिर के लिए अवतंस (आभरण) बनाया जाता था। शरद ऋतु में विकुंचित केशों में स्त्रियाँ नवमालती कुसुम भरकर रखती थीं। हेमन्त में रात्रि के समय में भी सिर पर पुष्पों की माला धारण की जाती थी जिससे सोते समय उनकी सुगन्ध का आनन्द लिया जा सके। शिशिर में केशों के बीच कुसुम निवेशित किया जाता था। पुरुष भी सिर पर पुष्पों की माला धारण करते थे।

कर्णाभूषण– कानों में लाल और रत्नों के बने–जड़े अनेक प्रकार के कनफूलों का प्रयोग स्त्री–पुरुष दोनों ही करते थे। पुरुषों के कर्णाभरणों में कुण्डल और कर्णभूषण का उल्लेख मिलता है। स्त्रियाँ कर्णपूर , कुण्डल , कनककमल और अवतंस पहनती थीं। कर्णफूल आदि सभी स्वर्णाभूषण होते थे। कुण्डल स्वर्ण और रजत के बनते थे। उनमें रत्न भी लगाये जाते थे। कुण्डल चलते समय हिलते रहते थे और कपोलों पर उनसे संघर्षण होता था। कानों के ये आभूषण झूमते या कसे होते थे। इन्हें कान की लौ में दोनों प्रकार से स्थिर किया जाता थाकृ यथारीति छेदने की क्रिया द्वारा तथा कान के ऊपर से सोने की चेन लपेटकर, जिससे यह कर्णफूल के भार को वहन कर सके।कान के अलंकार पत्रों और पुष्पों से भी प्रायः बनाए जाते थे। ग्रीष्म में कान पर शिरीष के पुष्प रखे जाते थे। वर्षा ऋतु में ककुभ की मंजरी से कान के लिए अवतंस बनाया जाता था। शरद में कानों में नीलोत्पल सुशोभित होता था। वसन्त में कनेर का फूल खोंसा जाता था। कर्णपूर के लिए अनेक प्रकार के पत्र और पुष्प उपयोगी होते थे। कुमुद के दल से कर्णपूर बनते थे।

मल्लिका–मञ्जरी का कर्णपूर बनाने के लिए उसे पहले लवली के फूल के द्रव में भिगोया जाता था। चन्दन और तमाल के पल्लव कान में खोंसे जाते थे। अशोक के पल्लव का भी कर्णपूर बनाया जाता था। गांव की स्त्रियाँ धान के बालों से शरद ऋतु में अवतंस बना लेती थीं।

ग्रीवाभूषण– कण्ठाभूषण भी स्त्री–पुरुष दोनों ही धारण करते थे। यह प्रायः विविध प्रकार के मोतियों के हार होते थे। इनको मुक्तावली, तारहार, हारशेखर, हारयष्टि , हार , मोती–माला आदि अनेक नामों से पुकारते थे जो सम्भवतः उनके रूप–भेद के प्रतीक

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR-July-Sept. 2025

थे। मुक्तावली मोतियों की एक अथवा अनेक लड़ियों की माला थी। इसके उल्लेख मोती–माला के नाम से भी हुए हैं। ताराहार भी मोतियों का हार था। हारशेखर हिमधवल माला थी। हारयष्टि, जो शुद्ध एकावली भी कहलाती थी, मोतियों की एक बड़ी माला थी जिसके बीच में एक विशिष्ट मणि गुही होती थी, जैसा अजन्ता के विख्यात पद्मपाणि बोधिसत्व के चित्र में उनकी ग्रीवा में फब रही है। कुमारगुप्त प्रथम के मन्दसौर अभिलेख में हार तथा स्वर्णहार का भी उल्लेख है। इसी शासक के बिलसड़ अभिलेख में भी हार का उल्लेख है जो मुक्ताओं का होता था। आदित्यसेन के अफसद पाषाण अभिलेख में भी हार का उल्लेख है। गुप्तकालीन मूर्तियों में प्रायः मोतियों की एक लड़ी की माला का ही अंकन देखने में आता है।

विष्णु की माला वैजयन्ती कहलाती थी जिसमें रत्नों के अनेक दल होते थे और प्रत्येक दल में पांच विशिष्ट रत्न विशेष क्रम और प्रकार से गुहे होते थे। विष्णु पुराण इन पांच रत्नों को मुक्ता, लाल, पन्ना, नीलम और हीरा की संज्ञा देता है। हेमसूत्र स्वर्ण का एक लड़ा हार था जिसमें मध्य में रत्न पिरोया होता था। गले में निष्कहार, 'निष्क' सिक्कों से गुहा होता था। ग्रैवेयक अथवा कण्ठाभरण के अतिरिक्त ग्रीवा में धारे, वक्ष पर गिरने वाले हारों की बड़ी संख्या थी।

ऋतुसंहार के ग्रीष्म–वर्णन में हार का जो महत्त्व दिखाया गया है उससे प्रतीत होता है कि हार से शरीर में शीतलता का संचार होता था। ऋतुसंहार के अनुसार ग्रीष्म में हार सेव्य है। ग्रीष्म का संताप दूर करने के लिए मणि के हारों का अतिशय महत्त्व बताया गया है। हेमन्त में हार पहने ही नहीं जाते थे। रत्न जटिल काञ्ची भी हेमन्त में स्त्रियाँ नहीं धारण करती थीं। मणिमेखला का सौभाग्य वसन्त में आरम्भ होता था। मुक्ता और मणियों के आभूषणों का पहनना बसन्त से आरम्भ होता था।

उपरोक्त सभी अलंकार प्रायः स्वर्ण, मुक्ता, मणि, रत्न आदि से बनते थे। इन बहुमूल्य आभूषणों को सम्भवतः बहुत थोड़े ही धनी लोग अपना पाते होंगे। सौंदर्य की दृष्टि से फूलों के बने हारों का वैदिक काल से ही महत्त्व रहा है। गुप्तकाल में पुष्पहारों का अत्यधिक प्रचलन था। प्रालंब और माला फूलों की भी होती थीं, क्योंकि समस्त रत्नजटित बहुमूल्य आभूषणों का स्थान कुसुमाभरण भी ले लिया करते थे। वसन्त में स्त्रियों के हार मनोहर कुसुमों से बनते थे। महुए के फूलों की सुगन्धित माला भी पहनने का प्रचलन था। महुए के फूलों की माला को जूड़े में लपेटने का भी प्रचलन था। विक्रमोर्वशीय में मन्दार की माला का भी उल्लेख प्राप्त होता है। पुष्पहारों के उल्लेख कामसूत्र में भी अनेक स्थलों पर मिलते हैं। तपस्वियों के लिए कमल के बीज की माला ही पर्याप्त थी। दीन हीन लोग गुंजाफल का हार पहनते थे।

भुजा, कलाई तथा अंगुलियों के आभूषण– भुजाओं में पहना जाने वाला बिजायट या 'अनन्त' नामक आभूषण था जिसे स्त्री और पुरुष दोनों पहनते थे। यह बाजूबन्द या अंगद भी कहलाता था। केयूर , कटक तथा वलय का प्रयोग भी भुजबन्ध के रूप में होता था। अंगद और केयूर भुजबन्ध के नाम थे जो सोने या रत्न जड़े सोने के बनते थे और जिन्हें नर–नारी दोनों पहनते थे। सोने के कंगन स्त्री–पुरुष दोनों पहनते थे तथा नग–जड़े कंगन केवल स्त्रियाँ पहनती थीं। घूंघरूदार कड़े भी स्त्रियाँ पहनती थीं। हाथ की कलाई में पहना जाने वाला आभूषण मणिबन्ध कहलाता था। वलय और अंगुलियक (अंगूठी) अनेक प्रकार के थे जो सोने या रत्नों के संयोग से सोने के बनते थे। अंगूठियाँ नर–नारी दोनों पहनते थे। अंगूठियों में अनेक प्रकार के रत्न जुड़े रहते थे, पर नाम खुदे होते थे और सर्पादि के आकार के होते थे या वे नागमुद्राओं से अंकित होती थीं। अनेक बार उनका उपयोग आदेश वहन के लिए अथवा मुहर के रूप में भी किया जाता था।

कटि के आभूषण– कटि–प्रदेश का अलंकरण–करधनी का प्रचलन सिन्धु सभ्यता के युग से ही रहा है। उस समय की करधनी में रत्न गुँथे हुए मिलते हैं। तभी से विविध प्रकार की करधनियों का प्रायः सदा ही प्रचलन रहा है। गुप्तयुग में करधनी के भी कितने ही प्रकार थे और कालिदास ने उनका मेखला , हेममेखला , कांची , कनककिंकिणी , रशना आदि अनेक पर्यायों के द्वारा उल्लेख किया है। साधारणतया ये सोने या रत्न जड़े सोने की विविध रंगों की बनती थीं। कांची कटि–प्रदेश से नीचे तक लटकती रहती थी। कांची से रूनझुन की ध्वनि शरीर की गति के साथ होती थी। इसमें किंकिणियाँ लगी होती थीं। कांची में मुक्तायें भी पिरोयी रहती थीं। शृंगार–शतक में किंकिणी की झनकार का उल्लेख किया गया है। इसमें लाल–रत्नों–जड़ी मेखलाओं से सुसज्जित कमलनयनाओं का भी उल्लेख मिलता है। करधनी प्रायः सोने की निर्मित होती थी। इसका उल्लेख तगड़ी के नाम से भी हुआ है।

गुप्तयुगीन अनेकानेक मूर्तियों में कई लड़ियों की करधनियाँ प्रदर्शित की गई हैं। अनेक लड़ियों और झालरों से युक्त होने के कारण मेखला से सुमधुर ध्वनि भी निकलती थी। सम्भवतः इसी लिए इसे किंकिणी भी कहा जाता था। कुमारगुप्त प्रथम के राजारानी प्रकार की मुद्राओं के पृष्ठ भाग में लक्ष्मी करधनी पहने है। इस प्रकार का चित्रण अन्य अनेक मुद्राओं में भी उपलब्ध होता है। कटि–प्रदेश के अलंकारों में किंकिणियों के अतिरिक्त ताराओं के आकार की मणियाँ पिरोई जाती थी। करधनी पुष्प की भी बनती थी। कालिदास ने केसर के पुष्प की दाम–कांची का उल्लेख किया है।

पादालंकार– स्त्रियाँ पैरों में रत्नजटित नूपुर धारण करती थीं। इनके विविधरूपों का अंकन तत्कालीन मूर्तियों, सिक्कों और चित्रों में प्रचुर मात्रा में हुआ है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के 'पर्यंक स्थित राजारानी प्रकार' के पृष्ठ भाग में रानी तथा कुमारगुप्त प्रथम के 'गजारोही प्रकार' के पृष्ठभाग में लक्ष्मी पायल पहने हैं। पैरों में अनेक लड़ियों वाले पायजेब और नूपुर के अतिरिक्त कड़े भी पहने जाते थे। ये सभी अलंकार प्रायः स्वर्ण के होते थे, जिनमें अनेक प्रकार के रत्न जड़े होते थे।

उपरोक्त आभूषणों में किरीट–मुकुट, चूड़ामणि, विविध प्रकार के हार, वैजयन्ती माला, कुण्डल, अंगद, वलय और अंगुलीयक स्त्रियों के साथ–साथ पुरुष भी पहनते थे। शेष अलंकार केवल नारियों के थे। गुप्तकालीन देवगढ़ की विष्णु मूर्ति के आभूषणों में किरीट–मुकुट, कुण्डल, हार, केयूर, कटक और वनमाला है। अजन्ता के भित्तिचित्रों में इन आभूषणों की विविधता देखते ही बनती है। विशेषकर गुहा संख्या 2 की परिचारिका के आभूषण दर्शनीय हैं, क्योंकि जहाँ उसका तन अलंकारों से ढका है, उस पर वसन का प्रायः नाम नहीं। गुप्तकालीन मुद्राओं में कुण्डल, हार, भुजबन्द और कड़ा प्रायः सभी नारी आकृतियों पर मिलते हैंकृ स्पष्टतः यह सर्वाधिक लोकप्रिय आभूषण रहे होंगे। आभूषण रखने के लिए मञ्जूषाओं अथवा गहनों की पिटारियों का उपयोग होता था। उल्लेखनीय है कि आभूषण पहनने का अधिकार केवल सधवा को ही था। विधवा तथा प्रोषितभर्तृका आभूषण नहीं धारण करती थीं। पति के परदेश चले जाने पर पत्नी उतने ही आभूषण धारण करती थी जो एक सुहागन स्त्री के लिए आवश्यक समझे जाते थे (प्रवासे मंगलमात्राभरण)।

फुट नोट्स (अंत टिप्पणियाँ)सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ब्रह्माण्ड पुराण, 3, 62, 24य वायु पुराण, 87, 24
2. वायु पुराण, 99, 69य ब्रह्माण्ड पुराण, 3, 74, 71य मत्स्य पुराण
3. विष्णु पुराण, 1, 9, 128

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR-July-Sept. 2025

4. कामसूत्र, 4, 1, 13
5. ऋतु., 2, 5य 3, 27
6. वही, 3, 19य शाकुन्तल., अंक 6य कुमार., 6, 91य 48, 68
7. मेघ., 1, 134य 2, 38य 49य रघु., 13, 48य 19, 45य कुमार., 7, 89
8. रघु., 17, 28य कुमार., 6, 81य 7, 35
9. कुमार., 7, 35
10. रघु., 1, 46य रघु., 16, 18
11. रघु., 6, 19य 10, 75
12. वही, 9, 13
13. वही, 3, 85य 18, 38य कुमार., 5, 79
14. कादम्बरी, पृ. 229
15. कादम्बरी, पृ. 188
16. अल्तेकर, गुप्त मुद्राएँ, पृ. 63
17. वही, पृ. 98
18. श्लोक 67
19. रघु., 8, 53
20. मेघ., 2, 2
21. रघु., 9, 67
22. विक्रमो., 4, 46
23. वही, 17, 23य 16, 50
24. ऋतु., 2, 21
25. कुमार., 7, 14
26. ऋतु., 2, 25
27. कुमार., 3, 62य ऋतु., 6, 3य 6
28. ऋतु., 6, 33
29. वही, 2, 22
30. वही, 4, 19य 3, 6
31. वही, 4, 16
32. वही, 5, 8
33. रघु., 9, 51
34. वही, 5, 65
35. वही, 7, 27य कुमार., 8, 62य ऋतु., 2, 25
36. कुमार., 6, 91य ऋतु., 2, 20य 3, 19
37. मेघ., 2, 11
38. कुमार., 6, 91
39. वही, 7, 23य 38
40. ऋतु., 2, 20
41. मृच्छकटिक, 1, 24
42. रघु., 16, 48य मेघ., 2, 2
43. ऋतु., 2, 21
44. वही, 3, 19
45. वही, 6, 6
46. कुमार., 3, 62य कादम्बरी, पृ. 34, 274
47. कादम्बरी, पृ. 216
48. वही, पृ. 34, 274
49. महापुराण, 16, 45–66
50. रघु., 13, 48य विक्रमो., 5, 15
51. रघु., 5, 52
52. ऋतु., 1, 6
53. वही, 1, 8य 2, 24य कुमार., 6, 68
54. ऋतु., 5, 70य कुमार., 5, 8य शृंगारशतक, श्लोक 90
55. ऋतु., 2, 26य शृंगारशतक, श्लोक 2 तथा 91
56. श्लोक 31
57. श्लोक 20
58. पंक्ति 10
59. फलीट, कॉ.इ.इ. भाग 3, पृ. 203
60. विक्रमो., अंक 1

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR-July-Sept. 2025

61. उपाध्याय, 'गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास', पृ. 231
62. श्लोक 1, 28
63. वही 1, 2, 4, 8
64. वही 4, 2
65. वही 4, 4
66. वही 6, 4
67. वही 6, 7
68. ऋग्वेद 4, 38, 6; 5, 53; 4, 10, 148, 3; अथर्ववेद 5, 25, 3
69. ऋतु., 6, 3
70. पद्मपुराण, सृष्टिखण्ड, 47, 31
71. कुमार., 7, 4
72. श्लोक 1, 7
73. कामसूत्र, 1, 4, 4य 2, 10, 5
74. कुमार., 3, 65
75. महापुराण, 28, 39
76. रघु., 6, 53य 16, 60
77. मालविका., अंक 2
78. शाकुन्तल., 3, 11य 6, 6य कुमार., 2, 64य मेघ., 1, 64य रघु., 19, 22
79. रघु., 6, 14य 6, 68य 7, 50य कुमार., 7, 69
80. मेघ., 1, 2य शृंगारशतक, श्लोक 8
81. मेघ., 1, 65
82. वही., 2, 19
83. शाकुन्तल., अंक 1
84. मालविका., अंक 1
85. वही
86. ऋतु., 3, 20
87. कुमार., 1, 38य 8, 26य रघु., 10, 8य ऋतु., 1, 4य 6
88. ऋतु., 1, 6
89. रघु., 6, 43य ऋतु., 2, 20य 6, 7
90. रघु., 13, 33
91. वही, 7, 10य कुमार., 5, 10य ऋतु., 3, 3य 1, 6
92. ऋतु., 3, 26
93. शृंगारशतक श्लोक 8य 28
94. वही, श्लोक 5
95. कुमार., 8, 81, 83य ऋतु., 3, 26य 4, 4
96. कुमार., 1, 38य 3, 55य 8, 14
97. अलतेकर, गु.मु., पृ. 149
98. मृच्छकटिक, 1, 27
99. कुमार., 3, 55
100. वही, 1, 34य 1, 5य रघु., 8, 63य शृंगारशतक, श्लोक 8, 64
101. अलतेकर, गु.मु., पृ. 98
102. वही, पृ. 136
103. मालविका., अंक 5
104. कामसूत्र, 4, 1, 42

*****